भूमिका

लोकगीत ग्राम-साहित्य का बहुत बड़ा अंग है। इनकी मौखिक परंपरा रही है। लोकगीत लोकजीवन का इतिहास है जिसमें कहीं से भी कल्पना का अधिक समावेश नहीं मिलता है। यह लोगों के नीजी जीवन में घटित होने वाली दैनंदिनी जैसा है। जिसका क्रमवार अध्ययन कर प्रारंभिक समाज और उनकी दीन-दशा को आज के संदर्भ में देखा परखा जा सकता है। देश के सभी भागों में गाए जाने वाले लोकगीत अलग-अलग क्षेत्रों और समुदायों की मूलभूत संस्कृति और उनकी जीवनचर्या को बारीकी से रेखांकित करता है। मैथिली लोकगीत लोक-साहित्य का वह भाग है जिसमें जीवन के सभी राग-अनुराग सहज रूप से दिखाई पड़ते हैं। मिथिलांचल सदियों से कुछ विशिष्ट परंपराओं का निर्वहन करता आ रहा है जो देश के अलग-अलग भागों में नहीं दिखाई पड़ती हैं। इन परंपराओं की झलक मैथिली लोकगीतों में सहज ढंग से देखी जा सकती है। मैथिली लोकगीतों में अलग-अलग जातियाँ, पर्व-त्योहार एवं अलग-अलग देवी-देवताओं के गीत मिलते हैं। इन गीतों को कुलगीत भी कहा जाता है। इन गीतों में इस बात का भी उल्लेख मिलता है कि किस प्रकार से जाति व्यवस्था ने प्रारंभिक वर्गीय चेतना जाति और श्रम-विभाजन की जड़ें मजबूत की है और बाद में अपने फायदे के लिए निचले तबके के लोगों का शोषण किया। यह शोषण शारीरिक ही नहीं, मानसिक भी था। छुआ-छूत जैसी समस्याओं ने तो वर्गों के बीच एक ऐसी खाई बना दी जिसे पाटने में आज भी लोग नाकाम हैं। दलित और स्त्री विमर्श जैसे मुद्दों पर मैथिली लोकगीत के संदर्भ में अलग से शोध-कार्य किया जा सकता है।

मैथिली लोकगीतों में तीनों वर्गों के अलग-अलग गीत मिलते हैं। एक वर्ग के गीत दूसरे वर्गों के गीतों से अलग हैं। उच्च वर्ग के लोगों में जिन गीतों का प्रचलन है वे अन्य दो वर्गों में नहीं हैं। मधुश्रावनी, उपनयन, कोजगरा, इत्यादि गीतों में सवर्ण जातियों के हर्ष का उल्लेख मिलता है। इन गीतों में समस्याओं का समावेश नहीं के बराबर है। मध्यवर्गीय गीतों में उन गीतों का उल्लेख हुआ है जिनका संबंध व्यापार से था जिनमें स्वर्णकार, हलुवाई, तेली, कुम्हार, बनिया, ग्वाला इत्यादि का उल्लेख मिलता है। निम्नवर्गीय गीतों का संकलन भी ठीक से नहीं किया गया है। यह वर्ग समाज में सबसे अधिक कष्ट झेल रहे थे। अछोप कहकर और इनको देख लेने मात्र से ही नापाक समझे जाते रहे हैं। मैथिली लोकगीत उन विडंबनाओं या ढोंग का पर्दाफाश करता है जिसमें उनके द्वारा बनाई गई सामग्री देवताओं के लिए स्वीकार तो है पर उन जातियों के स्पर्श मात्र से गंगा स्नान जैसी मान्यता उस वर्ग की ढोंगी परंपरा को दिखाने के लिए काफी है। आज लोकगीतों का संकलन आवश्यक जान पड़ता है। खासकर निम्नवर्गीय और श्रम सबंधित गीतों का। आज तक

मैथिली लोकगीतों का जो भी संकलन मिलता है उसमें ईमानदारी से किए गए संकलन का अभाव है। उन गीतों को कहीं भी जगह नहीं मिली है जिनमें शोषण और दमन का जिक्र है। कई गीत ऐसे भी हैं जो अकाल ही समाप्त हो गए क्योंकि उस समय पढ़ने लिखने का भी अधिकार समाज में कुछेक वर्गों के पास था। इस शोध प्रबंध में मैथिली लोकगीतों का अध्ययन मैथिली भाषा को आधार बनाकर किया गया है। अलग-अलग जनपदों में बोली जाने वाली मैथिली में साम्य-वैषम्य के साथ-साथ गीतों की गायन शैली में आने वाले अंतर को भी ध्यान में रखा गया है। अलग-अलग जातियों में मैथिली भाषा का व्यवहार अलग-अलग ढंग से किया जाता है इसका भी जिक्र इस प्रबंध में किया गया है। अभी तक मैथिली लोकगीतों के संकलन के अलावा कोई समीक्षात्मक किताबें नहीं लिखी गई हैं। कुछ शोध-कार्य हुए भी तो वे लोकगीतों की व्याख्या जैसे लगते हैं। 'मैथिली लोकगीतों का समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन' पर अभी तक कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है। इस शोध के द्वारा मैथिली लोकगीतों में उन लोगों की भाषा और समस्याओं का उल्लेख किया गया है जिसे प्रारंभ से ही हाशिए पर रखा गया था। मुसलमानों द्वारा बोली जाने वाली मैथिली भाषा का भी उल्लेख किया गया है जिसे सभ्य मैथिली समाज जोलहा बोली कहकर उपेक्षित करते रहे हैं। मैथिली की कई बोलियों का भी उल्लेख किया गया है जो अलग-अलग भागों में अलग-अलग ढंग से प्रयोग की जाती रही है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में भूमिका और उपसंहार के अतिरिक्त चार अध्याय हैं। इस लघु शोध-प्रबंध का प्रथम अध्याय 'मैथिली भाषा और समाज' है जिसमें मैथिली भाषा के भौगोलिक स्वरूप को दिखाया गया है। भाषा के ऐतिहासिक स्वरूप का भी उल्लेख किया गया है। साहित्यिक स्वरूप में मैथिली भाषा में रचित साहित्यिक विधाओं का उल्लेख किया गया है। इसी अध्याय के अंतर्गत मैथिली भाषी समाज और उनकी सामाजिक संरचना का जिक्र किया गया है जिनमें विविध संरचनाओं का उल्लेख किया गया है।

द्वितीय अध्याय में मैथिली लोकगीत का परिचय तथा प्रकार को दिखाया गया है। इस अध्याय में मैथिली लोकगीत के स्वरूप और लोकगीत के प्रकार का भी उल्लेख हुआ है। मैथिली लोकगीत के सांस्कृतिक पक्ष का भी बारीकी से जिक्र किया गया है।

तृतीय अध्याय 'मैथिली लोकगीतों का समाज-भाषावैज्ञानिक अध्ययन' है। इस अध्याय के अंतर्गत मैथिली लोकगीतों में वर्गभेद तथा गीत के अंतर्गत विविध काल को भी दिखाया गया है। मैथिली लोकगीतों में लिंगभेद, क्षेत्रीय, वैविध्य और लोकगीतों में सामाजिक समस्याओं का निरूपण कर विविध समस्याओं का उल्लेख किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में मैथिली लोकगीतों में कोड मिश्रण का उल्लेख किया गया है। इस प्रकार के अध्ययन से यह जानने का अवसर मिला कि मैथिली लोकगीतों में अन्य भाषाओं के शब्द किस प्रकार से गीत के लय को बनाए रखते हैं।

मैथिली लोकगीत के प्रति मेरी स्नातकोत्तर से चली आ रही रुचि ने शोध कार्य के दौरान मेरे अंदर अतृप्त जिज्ञासा प्रदान की।

सर्वप्रथम मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. धनजी प्रसाद के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरे लघु शोध-प्रबंध को न केवल अपने कुशल निर्देशन एवं उचित मार्गदर्शन से सहज बनाया, बल्कि समय-समय पर मेरे लघु शोध-प्रबंध की गहराई से जांच-पड़ताल की। साथ ही विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय एवं तमाम विभागीय अध्यापकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से समय-समय पर कई महत्त्वपूर्ण सुझाव देकर मुझे शोध-लेखन के समय ऊर्जा प्रदान किया।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के हिंदी के विभागाध्यक्ष डॉ. रामचन्द्र ठाकुर तथा मैथिली लोकगीतकार रेवती रमण झा का जिन्होंने समय-समय पर अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव से मुझे लाभान्वित किया।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ अपने अभिन्न मित्र रवि कुमार झा, अमित कुमार, पंचदेव प्रसाद, चन्दन कुमार, सत्येंद्र कुमार तथा नागेंद्र गौतम का, जिन्होंने समय-समय पर शोध-सामग्री तथा टंकण के द्वारा सहयोग प्रदान किया। साथ ही आभार व्यक्त करता हूँ म. गां. अं. हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुस्तकालय के अध्यक्ष एवं कर्मियों का, जिन्होंने मुझे आवश्यक सहयोग दिया।

मैंने लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करने के दौरान कमियों को दूर करने का प्रयास किया है, फिर भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

रामलखन कुमार